नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव® बुक्स

अनिवार्य हिन्दी-XI

(कक्षा 11 के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 320/-

- प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

*****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी अनिवार्य कक्षा 11

समय : 3.15 घंटे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित	12
रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन	25
व्यावहारिक व्याकरण	08
पाठ्यपुस्तक : **आरोह** (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : **वितान** (भाग-1)	15

1. अपठित : 12

(i) काव्यांश—10 से 12 पंक्तियाँ : (काव्यांश पर आधारित छह बहुचयनात्मक प्रश्न) 06

(ii) गद्यांश—150 से 200 शब्द : (गद्यांश पर आधारित छह बहुचयनात्मक प्रश्न) 06

2. रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन : 25

(i) निबन्ध (आधुनिक विषय पर विकल्प सहित) (लगभग 300 शब्द) 06

(ii) कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) 05

(iii) प्रिंट माध्यम के फीचर (समाचार और सम्पादकीय) 05

(iv) प्रतिवेदन/आलेख 05

(v) जनसंचार माध्यम पर आधारित प्रश्न (दो अतिलघूत्तरात्मक एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न) 04

3. व्यावहारिक व्याकरण : 8

(i) अविकारी शब्द 02

(ii) शब्द विचार 02

(iii) वाक्यांश के लिए एक शब्द, समानार्थी शब्द 02

(iv) वाक्य विचार 02

4. आरोह (गद्य-भाग–20 अंक, काव्य-भाग–20 अंक) 40

(गद्य-भाग)

(i) दो में से एक गद्यांश पर आधारित सप्रसंग व्याख्या 04

(ii) पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न (चार अतिलघूत्तरात्मक, तीन लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित दो दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न) 16

(काव्य-भाग)

(i) दो काव्यांशों में से किसी एक पर सप्रसंग व्याख्या 04

(ii) कविता की विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न (चार अतिलघूत्तरात्मक, तीन लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित दो दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न) 16

5. वितान– भाग 1 **15**

(i) पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित तीन बहुचयनात्मक, दो अतिलघूत्तरात्मक एवं तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न) 11

(ii) विषय-वस्तु पर आधारित दो में से एक निबन्धात्मक प्रश्न 04

निर्धारित पुस्तकें :

1. **आरोह–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **वितान–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

आरोह (भाग-1)

गद्य-खण्ड

1. नमक का दारोगा	प्रेमचन्द	1-14
2. मियाँ नसीरुद्दीन	कृष्णा सोबती	15-24
3. अपू के साथ ढाई साल	सत्यजित राय	24-34
4. विदाई-संभाषण	बालमुकुंद गुप्त	34-45
5. गलता लोहा	शेखर जोशी	45-57
6. रजनी	मन्नू भंडारी	57-69
7. जामुन का पेड़	कृश्न चंदर	69-81
8. भारत-माता	जवाहरलाल नेहरू	81-89

काव्य-खण्ड

1. कबीर	90-94
2. मीराँ	94-99
3. भवानी प्रसाद मिश्र	99-111
4. त्रिलोचन	111-118
5. दुष्यंत कुमार	118-125
6. अक्क महादेवी	125-129
7. अवतार सिंह पाश	129-137
8. निर्मला पुतुल	137-144

वितान (भाग-1)

1. भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर	कुमार गंधर्व	145-152
2. राजस्थान की रजत बूँदें	अनुपम मिश्र	152-160
3. आलो-आँधारि	बेबी हालदार	160-170
4. भारतीय कलाएँ		171-178

अपठित

1. अपठित काव्यांश	179-195
2. अपठित गद्यांश	195-214

रचना

(i) निबन्ध-लेखन–

1. इलेक्ट्रिक वाहन : आज की आवश्यकता	215

2. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रयोग एवं उसका प्रभाव 216
3. मेक इन इण्डिया **अथवा** स्वदेशी उद्योग 217
4. आत्मनिर्भर भारत 217
5. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी

अथवा

कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 218
6. शिक्षा का अधिकार **अथवा** अनिवार्य बाल-शिक्षा अधिकार 219
7. नारी-सुरक्षा की महत्ती आवश्यकता **अथवा** महिलाओं में बढ़ती असुरक्षा 220
8. खाद्य पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज

अथवा

मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार 221
9. आतंकवाद : एक विश्व समस्या **अथवा** आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या

अथवा

आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 221
10. रोजगार गारन्टी योजना : मनरेगा **अथवा** नरेगा : गाँवों में रोजगार योजना 222
11. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन

अथवा

प्लास्टिक थैली : क्षणिक लाभ-दीर्घकालीन हानि

अथवा

प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 223
12. इन्टरनेट की उपयोगिता **अथवा** इन्टरनेट : ज्ञान का भण्डार

अथवा

विद्यार्थी-जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 224
13. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप **अथवा** मोबाइल फोन का प्रचलन एवं प्रभाव 225
14. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व **अथवा** जल-संरक्षण की आवश्यकता एवं उपाय 226
15. कन्या-भ्रूण हत्या : एक चिन्तनीय विषय

अथवा

कन्या-भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 227
16. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 227
17. भारत में सूचना क्रांति का प्रसार 228
18. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 229
19. बाल-विवाह : एक अभिशाप 230

20. बढ़ते हुए फैशन का दुष्प्रभाव 231
21. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव **अथवा** कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 231
22. समय का सदुपयोग 232
23. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना **अथवा** विद्यार्थी जीवन की अविस्मरणीय घटना

अथवा

आँखों देखी वह दुर्घटना 233
24. गुरुजी जिन्हें मैं भुला नहीं सकता **अथवा** मेरे आदरणीय गुरुजी 234
25. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग **अथवा** योग की उपादेयता

अथवा

योग : स्वास्थ्य की कुंजी **अथवा** योग भगाए रोग 234
26. युवाओं में बढ़ती नशे की कुप्रवृत्ति **अथवा** मादक पदार्थ : मौत के द्वार 235
27. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा **अथवा** किसी रोचक यात्रा का वर्णन 236
28. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है **अथवा** विद्यार्थी–जीवन में अनुशासन 237
29. दहेज–प्रथा 238
30. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या **अथवा** बढ़ती महँगाई की मार 239
31. भीषण वर्षा की वह रात **अथवा** जब मेरे गाँव में भीषण वर्षा हुई 240
32. पर्यावरण प्रदूषण **अथवा** बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 240
33. त्योहारों का महत्त्व 241
34. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप 242
35. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या **अथवा** भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 242
36. मानव के लिए विज्ञान—वरदान या अभिशाप **अथवा** विज्ञान के बढ़ते कदम 243
37. इक्कीसवीं सदी का भारत **अथवा** मेरे सपनों का भारत 244
38. मनोरंजन के आधुनिक साधन 245
39. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान 246
40. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 246
41. राष्ट्र–निर्माण में युवकों का योगदान 247
42. सर्वशिक्षा अभियान **अथवा** सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 248
43. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक **अथवा** पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों का दायित्व

अथवा

पर्यावरण संरक्षण के उपाय 248
44. शिक्षित नारी : सुख–समृद्धिकारी 249
45. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व **अथवा** कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 250

46. राजस्थान के लोकगीत 251
47. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन **अथवा** वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य हानि 252
48. नखरालो राजस्थान 252
49. मेरी प्रिय पुस्तक (रामचरितमानस) 253
50. निरक्षरता : एक अभिशाप 254
51. बेरोजगारी : समस्या और समाधान **अथवा** रोजगार के घटते साधन 255
52. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 255
53. यदि मैं गाँव का सरपंच होता 256
54. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता **अथवा** राष्ट्रीय एकता

अथवा

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 257
55. शिक्षा सुधार में विद्यार्थियों की भूमिका 258
56. राजस्थानी संस्कृति 259
57. जीवन में खेलों का महत्त्व 259
58. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता **अथवा** नैतिक शिक्षा का महत्त्व 260
59. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका **अथवा** समाचार पत्रों का महत्त्व 261

(ii) कार्यालयी पत्र 262–278

(iii) प्रिन्ट माध्यम के फीचर (समाचार और सम्पादकीय) 279–295

(iv) प्रतिवेदन/आलेख 296–309

(v) जनसंचार माध्यम 310–326

व्यावहारिक व्याकरण 327–351

(1) अविकारी शब्द 327–330
(2) शब्द विचार 331–336
(3) वाक्यांश के लिए एक शब्द 336–340
(4) समानार्थी शब्द 340–345
(5) वाक्य विचार 345–351

अनिवार्य हिन्दी-कक्षा-XI
आरोह (भाग-1)
गद्य-खण्ड

1. नमक का दारोगा
(प्रेमचन्द)

लेखक-परिचय–हिन्दी साहित्य के इतिहास में कहानी और उपन्यास की विधा के विकास में प्रेमचन्द का अन्यतम स्थान माना जाता है। इनका जन्म सन् 1880 में उत्तर प्रदेश के वाराणसी के पास लमही नामक ग्राम में हुआ था। बचपन में अभावों से ग्रस्त इस शिखर पुरुष ने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद पारिवारिक समस्याओं के कारण जैसे-तैसे बी.ए. तक की पढ़ाई पूरी की। इन पर गाँधीवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव था। सन् 1936 में इस महान् साहित्यकार का निधन हो गया।

रचनाएँ–मुंशी प्रेमचन्द बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार थे। इनका वास्तविक नाम धनपतराय था, लेकिन इन्होंने सर्वप्रथम नवाबराय नाम से उर्दू में लिखना प्रारम्भ किया था। इन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं, जिनमें 'पंच परमेश्वर', 'पूस की रात', 'कफन' आदि कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। आपके उपन्यासों में 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम', 'गबन', 'रंगभूमि', 'गोदान', 'कर्मभूमि', 'निर्मला' एवं 'कायाकल्प' ने विशेष ख्याति प्राप्त की है। 'कुछ विचार' एवं 'विविध प्रसंग' इनके निबन्ध-संग्रह और 'कर्बला', 'संग्राम' एवं 'प्रेम की देवी' इनके द्वारा लिखित नाटक हैं।

पाठ-सार

'नमक का दारोगा' कहानी में उस समय का कथानक है, जब नमक पर सरकारी नियन्त्रण था। इस कहानी का सार इस प्रकार है—

1. मुंशी वंशीधर को नौकरी मिलना–जब सरकार द्वारा नमक के व्यापार पर नियन्त्रण किया गया, तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। तब नमक विभाग में नौकरी पाने के लिए सभी लोग ललचाने लगे। अपनी पढ़ाई समाप्त करके मुंशी वंशीधर नमक विभाग में दारोगा पद पर नियुक्त हो गये। नौकरी पर जाते समय वृद्ध पिता ने आशीर्वाद दिया और ऊपरी आमदनी का ध्यान रखने को कहा।

2. नमक की गाड़ियाँ रोकना–सर्दियों में रात के समय मुंशी वंशीधर सो रहे थे, तभी उन्हें अचानक गाड़ियों की नदी पार करने की ध्वनि सुनाई दी। वे तुरन्त यमुना पर नावों से बने पुल पर आये। उन्होंने दातागंज के प्रसिद्ध व्यापारी पं. अलोपीदीन की नमक की गाड़ियों को देखकर उन्हें रोक दिया।

3. पं. अलोपीदीन की गिरफ्तारी–अलोपीदीन भी एक सजीले रथ पर सवार थे। उन्होंने गाड़ियाँ छोड़ देने की एवज में नमक के दारोगा वंशीधर को रिश्वत देनी चाही और चालीस हजार रुपये देने का प्रस्ताव किया, परन्तु ईमानदार नमक का दारोगा नहीं माना। तब पं. अलोपीदीन को गिरफ्तार कर लिया गया।

4. न्यायालय में पेशी—प्रात: होते ही पं. अलोपीदीन की गिरफ्तारी की खबर सब ओर फैल गई। उसे अदालत में पेश कर मुकदमा प्रारम्भ किया गया। यद्यपि मुंशी वंशीधर ने ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया था, परन्तु पं. अलोपीदीन ने अपने धन के बल पर न्यायालय को अपने पक्ष में करने का पूरा प्रयास किया।

5. अलोपीदीन के पक्ष में फैसला—न्याय के दरबार में धन का नशा छाया हुआ था। इस कारण डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अलोपीदीन के विरुद्ध दिये गये प्रमाण असत्य बताकर उसके पक्ष में फैसला दिया। वकीलों ने फैसला सुना तो उछल पड़े। इस बात पर वंशीधर की काफी आलोचना होने लगी तथा अपमानित किया गया।

6. वंशीधर की नौकरी से मुअत्तली—वंशीधर ने धन से वैर लिया था। इसका मूल्य चुकाना जरूरी था। इस कारण एक सप्ताह के अन्दर ही उन्हें नौकरी से मुअत्तली का परवाना मिल गया। कर्त्तव्यपरायणता का ऐसा दण्ड पाकर जब वंशीधर अपने घर पहुँचे, तो वृद्ध पिता को क्रोध आया, वृद्धा माता को दुःख हुआ और उनकी मनोकामनाएँ मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने भी कई दिनों तक सीधे मुँह बातें नहीं कीं।

7. पं. अलोपीदीन का आगमन—इस प्रकार घर में रहते हुए वंशीधर को अभी एक सप्ताह बीत गया। तब एक दिन सन्ध्या-काल को पं. अलोपीदीन उनके द्वार पर आये। वंशीधर के वृद्ध पिता ने उनकी आगवानी की और लल्लो-चप्पो की बातें कर अपने पुत्र के व्यवहार के लिए खेद जताया। तब अलोपीदीन ने वंशीधर की कर्त्तव्यनिष्ठा की खूब प्रशंसा की।

8. अलोपीदीन का आग्रहपूर्ण प्रस्ताव—वृद्ध पिता के समक्ष अलोपीदीन ने वंशीधर की ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा की और कहा कि आज मैं स्वयं आपकी हिरासत में हूँ। मेरा विनम्र आग्रह है कि आप मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें। ऐसा कहकर अलोपीदीन ने एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र उनके सामने रखा, जिसे पढ़कर वंशीधर ने कृतज्ञता व्यक्त की। क्योंकि उस पत्र में पं. अलोपीदीन ने मुंशी वंशीधर को अपनी समस्त जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था।

9. कर्त्तव्यनिष्ठा की विजय—मुंशी वंशीधर ने अलोपीदीन का आग्रह मानकर वह पद स्वीकार कर कागज पर हस्ताक्षर किये। उस समय वंशीधर की आँखें भक्ति, श्रद्धा एवं कृतज्ञता के कारण डबडबा गईं। कर्त्तव्यनिष्ठा की विजय हुई और अलोपीदीन ने खुशी से उन्हें गले लगा लिया।

कठिन शब्दार्थ—सूत्रपात होना = आरम्भ होना। **पौ-बारह होना** = मजे होना। **बरकंदाजी** = बंदूक लेकर चलने वाला सिपाही, चौकीदार। **ओहदा** = पदवी। **आत्मावलंबन** = अपना सहारा। **सन्नाटा** = चुप्पी। **स्तंभित** = हैरान। **हिरासत** = गिरफ्तारी। **अविचलित** = बिना डगमगाये। **अलौकिक** = इस लोक में न घटने वाला, अद्भुत। **कातर** = परेशान, दुःखी। **अमले** = कर्मचारी मंडल, नौकर-चाकर। **तज़वीज़** = राय, निर्णय। **गर्वाग्नि** = गर्व की आग। **कुड़बुड़ाना** = बड़बड़ करना। **पछहिएँ** = पश्चिमी। **ठकुर सुहाती** = मालिक को अच्छी लगने वाली। **बेमुरौवत** = बिना लिहाज।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

पाठ के साथ—

प्रश्न 1. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर—कहानी का प्रमुख पात्र वंशीधर हमें सबसे अधिक प्रभावित करता है, क्योंकि वह कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार दारोगा है। वह नमक जैसे विभाग में नियुक्त होने पर भी चारित्रिक दृढ़ता से भ्रष्टाचार के दलदल में कमल की तरह निर्लिप्त रहता है।

प्रश्न 2. 'नमक का दारोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौनसे दो पहलू (पक्ष) उभर कर आते हैं?

उत्तर—कहानी में पं. अलोपीदान के व्यक्तित्व के दो महत्त्वपूर्ण पहलू हमारे सामने उभर कर आते हैं, जो निम्न हैं—

(1) कहानी के आदि से मध्य तक उसका **भ्रष्ट व्यक्तित्व** हमारे सामने आता है। यह धन के बल पर अपने सभी कार्य सिद्ध कर लेता है। अपने भ्रष्ट रूप से वह कोर्ट-कचहरी आदि में सभी को प्रभावित करता है और उसी के बल पर वह धन कमाता है।

(2) कहानी के अन्त में वह **गुणग्राही व्यक्ति** के रूप में हमारे सामने आता है। वह अपने को गिरफ्तार करने वाले वंशीधर की कर्त्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी से प्रभावित होकर उसे आदरपूर्वक अपनी सारी सम्पत्ति का स्थायी मैनेजर नियुक्त कर देता है।

प्रश्न 3. कहानी के लगभग सभी पात्र समाज की किसी न किसी सच्चाई को उजागर करते हैं। अग्रलिखित पात्रों के संदर्भ में पाठ के उस अंश को उद्धृत करते हुए बताइए कि ये समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं—

अनिवार्य हिन्दी–कक्षा-XI
वितान (भाग-1)

1. भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर

लेखक : कुमार गंधर्व

लेखक-परिचय—प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत गायक कुमार गंधर्व का जन्म सन् 1924 में सुलेभावि जिला बेलगाँव (कर्नाटक) में हुआ था। इनका मूल नाम शिवपुत्र सिद्दारमैया कामकली था। मात्र 10 वर्ष की उम्र में इन्होंने गायकी की। इनके संगीत की मुख्य विशेषता मालवा लोकधुनों और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सुन्दर सामंजस्य है, जिसका अद्भुत नमूना कबीर के पदों का उनके द्वारा गायन है। कुमार गन्धर्व ने लोक में रचे-बसे लुप्तप्राय: पदों का संग्रह किया और इन्हें स्वरों में बाँधा। इससे इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली। इन्हें कालिदास सम्मान तथा 'पद्मविभूषण' सहित अनेक सम्मानों से अलंकृत किया गया। इनका निधन सन् 1992 में हुआ।

पाठ-सार

'भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर' नामक व्यक्ति-वृत्त प्रसिद्ध गायक कुमार गन्धर्व द्वारा लिखित है। इसका सार इस प्रकार है—

1. अजब गायिका—बरसों पहले एक बार जब लेखक बीमार पड़ा, तो उसने एक दिन रेडियो लगाया। उस पर लेखक ने एक अद्वितीय स्वर सुना। वह उस गीत को तन्मयता से सुनता रहा। गीत की समाप्ति के बाद गायिका का नाम घोषित होने पर वह जान सका कि यह कोमल स्वर सुप्रसिद्ध गायक हृदयनाथ मंगेशकर की बेटी लता मंगेशकर का है। उसे ज्ञात हुआ कि वह गीत बरसात से पहले बने किसी चित्रपट का था। लता से पहले चित्रपट संगीत में प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का नाम था, परन्तु लता उससे कहीं आगे निकल गई, जो चमत्कार जैसा ही था।

2. लता के गायन का प्रभाव—भारतीय गायिकाओं में लता की जोड़ की कोई गायिका नहीं है। लता के कारण चित्रपट संगीत को विलक्षण लोकप्रियता मिलने के साथ ही लोगों का शास्त्रीय संगीत की ओर दृष्टिकोण भी बदला। लता के गायन के कारण ही आज नन्हे-मुन्ने भी सुरीले स्वर में गाने लगे हैं। चित्रपट संगीत के कारण लोगों का विविध प्रकार के संगीत से परिचय हो रहा है। उनका स्वर-ज्ञान बढ़ रहा है। संगीत की लोकप्रियता, प्रसार और अभिरुचि का विकास, सबका श्रेय लता को ही है।

3. लता का गायन—शास्त्रीय गायकी और लता की गायकी में से सामान्य श्रोता लता की गायकी को ही अधिक पसन्द करते हैं। इसका कारण है—लता का गानपन, उसके स्वरों की निर्मलता, मादकता और सुरीलापन। श्रोता को रागों से नहीं, सुमधुर गानपन से मतलब होता है। लता के स्वर में शत-प्रतिशत गानपन है। यही लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म है।

लेखक बताता है कि नूरजहाँ के गायन में मादक उत्तान होती थी, वहीं लता के स्वर में एक कोमलता और मुग्धता है। संगीत दिग्दर्शकों को उस निर्मलता का जितना उपयोग कर लेना चाहिए था, वे उतना नहीं कर सके। नादमय उच्चार लता के गायन की एक और विशेषता है।

4. संगीत निर्देशकों के प्रयास—ऐसा माना जाता है कि लता के गीतों में करुण रस प्रभावशाली रीति से व्यक्त होता है, परन्तु लेखक का मत है कि लता ने मुग्ध शृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गीत बड़ी उत्कटता से गाये हैं। गाने में संगीत-निर्देशक उनसे अधिकाधिक ऊँची पट्टी में गवाते हैं और उनके साथ अन्याय करते हैं।

5. शास्त्रीय संगीत में लता का स्थान—शास्त्रीय संगीत में लता के स्थान के बारे में पूछना प्रयोजनहीन है, क्योंकि चित्रपट और शास्त्रीय संगीत की तुलना नहीं की जा सकती। दोनों की ताल में अन्तर होता है। चित्रपट संगीत में आधे तालों का प्रयोग किया जाता है। चित्रपट संगीत वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होनी चाहिए जो कि लता के पास निःसंशय है। शास्त्रीय गायक की तीन घण्टे की महफिल का सारा आनन्द लता की तीन मिनट की ध्वनिमुद्रिका से लिया जा सकता है।

लता के एक गाने में स्वर, लय और शब्दार्थ का त्रिवेणी संगम होता है और महफिल की बेहोशी उसमें समायी रहती है। वस्तुतः गाने का महत्त्व इस बात पर होना चाहिए कि उसमें रसिक को आनन्द देने की सामर्थ्य कितनी है। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर अवलम्बित रहती है।

6. खानदानी गायिका का स्थान—संगीत के क्षेत्र में लता का स्थान अव्वल दर्जे के खानदानी गायक के समान ही है। यद्यपि खानदानी गवैयों का मानना है कि चित्रपट संगीत के कारण लोगों की अभिरुचि बिगड़ गई है, परन्तु लेखक के अनुसार चित्रपट संगीत ने लोगों के कान खराब नहीं किये हैं, उल्टे सुधार दिये हैं।

7. चित्रपट संगीत का महत्त्व—लेखक बताता है कि शास्त्रीय गायकों ने संगीत के क्षेत्र में अपनी हुकूमतशाही स्थापित कर रखी है तथा शास्त्र-शुद्धता को अत्यधिक महत्त्व दे रखा है। लोगों को शास्त्र-शुद्ध और नीरस गानों के स्थान पर सुरीला और भावपूर्ण गीत चाहिए। चित्रपट-संगीत यह क्रान्ति लाया है। इससे लोगों की संगीत-विषयक अभिरुचि में प्रभावशाली मोड़ आया है। इस संगीत की लचकदारी उसकी एक और सामर्थ्य है। चित्रपट-संगीत का तन्त्र ही अलग है। वास्तव में संगीत का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इसके अब तक अलक्षित, असंशोधित और अदृष्टिपूर्व बड़े क्षेत्र की खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते आ रहे हैं। इससे चित्रपट-संगीत दिनोंदिन विकसित होता जा रहा है।

8. लता चित्रपट-संगीत की साम्राज्ञी—अत्यधिक विस्तृत चित्रपट-संगीत क्षेत्र की लता अनभिषिक्त साम्राज्ञी है। अनेक गायक-गायिकाओं के मध्य लता की लोकप्रियता सर्वोपरि है। उनकी लोकप्रियता के शिखर का स्थान अव्वल है और अबाधित है। देश में ही नहीं, परदेस में भी उनके गीत सुनकर लोग झूम उठते हैं। शताब्दियों में शायद एक बार पैदा होने वाला ऐसा कलाकार हमारी आँखों के सामने है, हमारे बीच में है। यह हम सबका परम सौभाग्य है।

कठिन शब्दार्थ—**तन्मयता** = तल्लीनता, भाव-विभोर होकर। **सितारिये** = सितारवादक। **विलक्षण** = अद्भुत, अत्यन्त दुर्लभ। **दृष्टिकोण** = देखने का ढंग। **संस्कारित** = संस्कारयुक्त। **त्रिताल या तीन ताल** = सोलह मात्राओं का ताल। **राग मालकोस** = कोमल स्वर में गाया जाने वाला गम्भीर प्रकृति का राग। **नादमय** = आवाजयुक्त। **प्रयोजनहीन** = निरुद्देश्य, बिना अर्थ का। **परिष्कृत** = शुद्ध। **आघात** = गायन, वादन के समय मात्राओं के अनुसार ताल का प्रयोग। **सुभाषित** = उत्तम ढंग से कहा गया। **जलदलय** = द्रुत, तेजलय। **हुकूमतशाही** = आधिपत्य, हुकूमत। **प्रतिध्वनित** = आवाज टकराकर वापस आना। **अलक्षित** = नहीं देखा गया। **अदृष्टिपूर्व** = जिस पर लोगों की दृष्टि न पड़ी हो। **अबाधित** = बाधाहीन।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक ने पाठ में गानपन का उल्लेख किया है। पाठ के सन्दर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएँ कि आपके विचार में इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?

उत्तर—लेखक ने पाठ में 'गानपन' का उल्लेख किया है, जिसका अर्थ है वह गायकी जो एक आम आदमी को भी भावविभोर कर दे। हमारे विचार में इसे प्राप्त करने के लिए स्वरों की निर्मलता होना आवश्यक है। स्वरों में लोच, मिठास, कोमलता और मुग्धता का पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। जीवन को देखने के दृष्टिकोण में भी निर्मलता होनी चाहिए, जिससे गायन में भी निर्मलता झलक सके। इसके लिए निर्मलता, कोमलता और मुग्धता का पर्याप्त अभ्यास करने की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2. लेखक ने लता की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है? आपको लता की गायकी में कौनसी विशेषताएँ नजर आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर—लेखक ने लता की गायकी में निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है—(1) गानपन, (2) स्वरों की निर्मलता, (3) स्वरों की कोमलता और मुग्धता, (4) शास्त्र-शुद्धता एवं नादमय उच्चार, (5) उत्कटता से गीतों का गायन। हमें भी लता की गायकी में उपर्युक्त सभी विशेषताएँ नज़र आती हैं। इसके साथ ही करुण रस की प्रभावशाली

अपठित

1. अपठित काव्यांश

निर्देश—निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1)

मैं नहीं चाहता चिर सुख, मैं नहीं चाहता चिर दु:ख,
सुख-दु:ख की आँख मिचौनी में, खोले जीवन अपना मुख,
सुख-दु:ख के मधुर मिलन से, यह जीवन हो परिपूरण,
फिर घन में ओझल हो शशि, फिर शशि में ओझल हो घन।
जग पीड़ित है अति सुख से, जग पीड़ित है अति दु:ख से,
मानव जग में बँट जावें, दु:ख सुख से औ' सुख दु:ख से।
अविरल दु:ख है उत्पीड़न, अविरल सुख भी उत्पीड़न,
दु:ख-सुख की दिवा निशा में, सोता जगता जग-जीवन।
यह साँझ-उषा का आँगन, अलिंगन विरह मिलन का,
चिर हास अश्रुमय आनन, रे इस मानव का जीवन!

बहुचयनात्मक प्रश्न—

1. जग किससे पीड़ित है?
   (अ) सुख से (ब) दु:ख से
   (स) अति सुख-दु:ख से (द) सुख-दु:ख दोनों से ( )
2. कवि ने सुख-दु:ख को लेकर क्या कामना की है?
   (अ) जीवन में सुख आता रहे (ब) जीवन में दु:ख आता रहे
   (स) जीवन में सुख-दु:ख का चक्र चलता रहे (द) जीवन में सुख-दु:ख की अति हो ( )
3. 'अविरल दु:ख है उत्पीड़न अविरल सुख भी उत्पीड़न।' इसमें कौन-सा अलंकार है?
   (अ) अनुप्रास (ब) यमक
   (स) श्लेष (द) पुनरुक्ति प्रकाश ( )
4. कवि ने सुख-दु:ख की तुलना किससे की है?
   (अ) दिन-रात से (ब) पाप-पुण्य से
   (स) धर्म-अधर्म से (द) हानि-लाभ से ( )
5. प्रस्तुत कविता में कौन-सा काव्य गुण है?
   (अ) माधुर्य (ब) ओज
   (स) प्रसाद (द) उपर्युक्त में कोई नहीं ( )
6. उपयुक्त काव्यांश का शीर्षक है—
   (अ) मानव के सुख (ब) हमारे दु:ख
   (स) सुख-दु:ख का महत्त्व (द) जीवन की पूर्णता ( )

उत्तरमाला

1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (स)

(2)

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये,
दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!!
उपशम को ही जो जाति धर्म कहती है,
शम, दम, विराग को श्रेष्ठ कर्म कहती है,
धृति को प्रहार, क्षान्ति को वर्म कहती है,
अक्रोध, विनय को विजय-मर्म कहती है,
अपमान कौन, वह जिसको नहीं सहेगी?
सबको असीस सब का बन दास कहेगी॥

बहुचयनात्मक प्रश्न—

1. सीस कट जाने पर भी क्या नहीं छोड़ना चाहिए?
   (अ) अपनी आन (ब) अन्याय का मार्ग
   (स) अपना अहंकार (द) उपर्युक्त सभी ( )
2. किसके सामने नहीं झुकना चाहिए?
   (अ) धर्म के (ब) दु:ख के
   (स) अन्याय के (द) धन के ( )
3. जीना है तो किसमे मत डरो?
   (अ) दु:ख से (ब) धृति से
   (स) दासता से (द) मृत्यु से ( )
4. श्रेष्ठ कर्म किसे कहते हैं?
   (अ) शम को (ब) दम को
   (स) विराग को (द) उपर्युक्त सभी ( )
5. उदण्ड का विलोम शब्द काव्यांश में प्रयुक्त हुआ है—
   (अ) अक्रोध (ब) विनय
   (स) उपशम (द) अनय ( )
6. 'दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है' पंक्ति का आशय है—
   (अ) व्यक्ति एक बार ही मरता है (ब) यमराज बार-बार मारता है
   (स) व्यक्ति का मरण बार-बार होता है (द) उपर्युक्त सभी ( )

उत्तरमाला

1. (अ) 2. (स) 3. (द) 4. (द) 5. (ब) 6. (अ)

(3)

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है॥
यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी 'आर्य' हैं,
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े,
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े॥